सूरजमुखी के बीज से उत्कृष्ट कोटि का खाद्य तेल प्राप्त होता है और खली मुर्गी को खिलायी जाती है.

सूरजमुखी की करें खेती

15 से 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज

डॉ अनिल कुमार सिंह
वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृषि विज्ञान केंद्र, सरैया, मुजफ्फरपुर

डॉ रंजू कुमारी
सहायक प्राध्यापक सह वैज्ञानिक, नालंदा उद्यान महाविद्यालय, नूरसराय, नालंदा

सूरजमुखी या सूर्यमुखी का वनस्पति नाम हेलियनथस एनस है. इसका नाम सूरजमुखी इस कारण पड़ा कि यह सूर्य की ओर झुकता है. यह पूरे विश्व के कई देशों में उगाया जाता है. यह फूल अमेरिका का देशज है. लेकिन रूस , अमेरिका, ब्रिटेन, मिस्र, डेनमार्क, स्वीडन और भारत आदि अनेक देशों में उगाया जाता है. इसके फूल की पंखुड़ियां पीले रंग की होती है और मध्य में भूरे, पीत या नीलोहित या किसी किसी वर्णसंकर पौधे में काला चक्र रहता है. चक्र में ही चिपटे काले बीज रहते हैं. बीज से खाद्य तेल प्राप्त होता है और खली मुर्गी को खिलायी जाती है. सूरजमुखी की फसल की सामान्य प्रजातियों की पैदावार 12 से 15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है. वही संकर प्रजातियों की पैदावार 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है.

सूरजमुखी की निम्नलिखित किस्में होती हैं

अमेरिकी ज्वाइंट, हाइब्रीड, आर्निका, ऑटम ब्यूटी, एजटेक सन, ब्लेक ऑइल, इवार्फ सनस्पोट, इवनिंग सन, ज्वाइंट प्रिमरोज, इंडियन ब्लेकेट हाइब्रीड, आयरिश आइज, इतालवी वाइट, कांग हाइब्रीड, लार्ज ग्रे स्ट्राइप, लेमन क्वीन, मेमोथ सूरजमुखी, मंगोलियाई ज्वाइंट, ऑरेंज सन, पीच पैशन , रेड सन, रिंग ऑफ फायर, रोस्टोव, स्कायस्क्रेपर, सोराया, स्ट्राबेरी ब्लोंड, सनी हाइब्रीड, टाइयो, तारा हमारा, टेडीबियर, टाइटन, वैलन्टाइन, वेलवेट क्वीन, येलो एम्प्रेस सहित कई प्रजातियां है.

ऐसे करें खेत की तैयारी

नमी नहीं होने पर खेत पलेवा करके जुताई करनी चाहिए. एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से और बाद में 2 से 3 जुताई देसी हल या कल्टीवेटर से करनी चाहिए .मिट्टी भुरभुरी कर लेना चाहिए. सूरजमुखी की बुआई का सर्वोत्तम समय फरवरी का दूसरा पखवाड़ा है. इस समय बुआई करने पर मई के अंत तक या जून के प्रथम सप्ताह तक फसल पक कर तैयार हो जाती है. यदि देर से बुआई की जाती है तो पकने पर बरसात शुरू हो जाती है और दानों का नुकसान हो जाता है. पहली सिंचाई बुआई के 20 से 25 दिन बाद हल्की या स्प्रिंकलर से करनी चाहिए. बाद में आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए. कुल 5 या 6 सिंचाइयों की आवश्यकता पड़ती है. फूल निकलते समय दाना भरते समय बहुत हल्की सिंचाई की आवश्यकता है.

सूरजमुखी की फसल को प्रमुख समस्या 01 रतुआ 02 डाउनी मिल्ड्यु 03 पाऊडरी मिल्ड्यू 04 हेड रॉट 05 राइजोपस हेट राट

रोग और उपचार

रतुआ
इस रोग में पत्तियां पर छोटे-छोटे लाल भूरे धब्बे बनते हैं. यह रोग पत्तियों पर फैल जाता है. पत्तियां पीली दिखने लगती है और बाद में गिर जाती है. इसको रोकने के लिए पिछली फसल के अवेशषों को नष्ट कर देना चाहिए. साथ ही मेनकोजेब का छिड़काव करना चाहिए.

डाउनी मिल्ड्यू
इस रोग के लगने से पौधा छोटा रह जाता है. जिसमें पत्तियां मोटी और निचली सतह पर फफूंद दिखती है. अधिक नमी से फफूंद पत्तियों की ऊपरी सतह पर फैल जाती है. इसके रोग प्रबंधन के लिए रोग प्रतिरोधी संकरो को लगाना जरूरी है. फफूंद नाशक रोग उपचार करना चाहिए. खरपतवार को हटाना चाहिए.

सफेद चूर्णी रोग
इस रोग के कारण पत्तियों पर सफेद चूर्ण जैसा दिखायी देता है. पुरानी पत्तियों की ऊपरी सतह पर सफेद और ग्रे फफूंदी दिखायी देती है. जैसे-जैसे पौधे परिपक्व होते हैं, सफेद फफूंदी वाले क्षेत्रों में ब्लैक पिन हेड का आकार दिखायी देता है. प्रभावित पत्ते अधिक चमकते है, मुड़ते हैं और मर जाते हैं. इसकी रोकथाम के लिए संक्रमित पौधे को हटा देना चाहिए. साथ ही सल्फर डस्ट या कैलिक्सिन का प्रयोग करना चाहिए.

हेडरॉट
प्रभावित हेड जब भी मिट्टी सूख जाये और मिट्टी का तापमान बढ़ जाये तो सिंचाई करनी चाहिए. ट्राइकोडर्मा विराइड फॉर्मयुलेशन से बीज उपचार करना चाहिए .आल्टेरनेरिया ब्लाइट पत्तियों पर काले रंग के गोल व अंडाकार धब्बे बनते हैं. बाद में यह धब्बे आकार में बढ़ जाते है और पत्ते झुलस जाते है. ऐसे धब्बों में गोल छल्ले भी नजर आते हैं. इससे बचने के लिए जब मिट्टी सूख जाये तो सिंचाई करनी चाहिए. अच्छे जल निकासी वाली भूमि में फसल लगानी चाहिए.

तना व जड़ गलन
शुरू में हल्के भूरे रंग का धब्बा तने पर भूमि की सतह के पास आता है. बाद में नीचे और ऊपर फैल जाता है. जड़ व तना काला पड़ जाता है. पौधे सूख जाते है. यह बीमारी अधिकतर फलों के दाने बनते समय आती है. इससे बचने के लिए पौधे की शक्ति बनाये रखने के लिए पोषण प्रदान किया जाना चाहिए.

बीज कड़े होने पर करें कटाई

जब सूरजमुखी के बीज कड़े हो जाए तो मुंडको की कटाई करके या फूलों की कटाई करके एकत्र कर लेना चाहिए. इनको छाया में सूखा लेना चाहिए. इनको ढेर बनाकर नहीं रखना चाहिए. इसके बाद डंडे से पिटाई करके बीज निकल लेना चाहिए. साथ ही सूरजमुखी में थ्रेशर का प्रयोग करना उपयुक्त होता है.बीज में नमी 8 से 10% से अधिक नहीं रहनी चाहिए. बीजों से 3 महीने के अन्दर तेल निकाल लेना चाहिए अन्यथा तेल में कड़वाहट आ जाती है.